# ऋता शुक्ल के उपन्यासों में मानवीय संवेदना

**प्रियंका कुमारी**
(षोधार्थी)
मानविकी संकाय, राँची विष्वविद्यालय, राँची
**डा. रेणु सिन्हा**
शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
निर्मला कॉलेज, राँची विष्वविद्यालय, राँची

**सारांश** - मनुष्य के हृदय में निहित वह कोमल भावना जिसके माध्यम से वह दूसरों के सुख-दुख को अपने हृदय में महसूस कर हँसता-रोता है, मानवीय संवेदना है। मानवीय संवेदना वह भाव है जिसके बल पर मनुष्य अन्य प्राणियों से अपनी अलग पहचान स्थापित करता है। इसके अभाव में मनुष्य कठोर, निष्ठुर तथा कृत्रिम बन जाता है और जब मनुष्य कठोरता तथा निष्ठुरता का भाव ग्रहण करेगा तब समाज भी पूर्णतः कठोर और यांत्रिक बन जाएगा।

**बीज शब्दः-** मानवीय संवेदना, जीवन संघर्ष, भौतिकवादी प्रतिस्पर्द्धा, सुसंस्कृत समाज, ममत्व, धरोहर, उच्चादर्ष, आध्यात्मिक

संवेदना वह अदृष्य डोर है जो मनुष्य को मनुष्य के साथ बड़ी मजबूती से बाँधे रखता है। यही नही जब मनुष्य प्रेम, करूणा, दया, परोपकार के समन्वित भाव को हृदय में धारण करता है तो वह मनुष्यता के उच्चतम षिखर पर आरूढ़ हो जाता है। जब किसी दुखी-पीड़ित शोषित व्यक्ति के आँसू हमें विचलित करते हैं तब हम उसके दुख को दूर करने का प्रयास भी करते हैं। इसी प्रकार के प्रयास से मानवीय संवेदना साकार होती है। जब ऐसे प्रयास किसी व्यक्ति के द्वारा किये जाते हैं तब वह किसी ईष्वरीय अवतार से कम नहीं होता है। मनुष्य का यह प्रयास समाज में आपसी प्रेम, भाईचारा और सौहार्द को बनाता है।

यदि साहित्य के माध्यम से मानवीय संवेदना को स्थापित करने की बात की जाय तो यह बिल्कुल भी गलत नही है। प्रारंभ से ही साहित्य और कला मानवीय संवेदना की सषक्त अभिव्यक्ति के माध्यम रहे हैं। सभी काल में साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में समाज के शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, असहाय वर्ग के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। बात चाहे प्रेमचंद की हो या महादेवी वर्मा की, निराला की हो या कृष्णा सोबती की - सभी ने अपनी लेखनी से संवेदना के स्वर को ऊँचा किया है। प्रेमचंद के 'गोदान' का 'होरी' आज भी लोगों के हृदय के संवेदना के तार को झंकृत करता है। महादेवी वर्मा ने मनुष्य से अलग पशु-पक्षियों के जीवन तथा उनकी क्रियाओं के माध्यम से भी संवेदना के भाव को पुष्ट किया है। इसी प्रकार वर्तमान युग में झारखंड की प्रसिद्ध महिला साहित्यकार ऋता शुक्ल ने भी अपनी अधिकांष रचनाओं में मानवीय संवेदना के विभिन्न रूपों का बड़ी गहराई से चित्रण किया है।

पाठक वर्ग जब साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ता है, तो उसमें छिपे भाव उसे सोचने-विचारने पर विवष करते हैं। विभिन्न रचनाओं (उपन्यास, कहानी, कविता) के अलग-अलग पात्र अपनी विषेषताओं से पाठक वर्ग को प्रभावित करता है। पाठक वर्ग भी पात्रों के जीवन संघर्ष, व्यथा, वेदना को स्वयं के साथ जोड़कर देखने लगता है। उसका हृदय करूणा से भर उठता है। पात्रों के सुख-दख को वह अपना मानने लगता है। इस प्रकार साहित्य समाज को संवेदनषील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुख की बात यह है कि वर्तमान युग की भौतिकवादी प्रतिस्पर्द्धा ने मानवीय मूल्यों का क्षरण किया है। एक ओर विज्ञान के विकास से समाज हर प्रकार की सुख-सुविधा से परिपूर्ण है, तो दूसरी ओर मनुष्य के आपसी तालमेल तथा आत्मीयता धीरे-धीरे शून्य की ओर बढ़ते जा रहे हैं। समाज के अलग-अलग वर्गों की बात कौन कहे अब तो अपने ही परिवार में सुख-दुख बाँटनेवाले नहीं मिल रहे हैं। परिवार में पैसे कमाने की होड़ ने समयाभाव को जन्म दिया। इसी प्रगति तभी सार्थक हो सकती है जब वह मानव कल्याण से जुड़ी हो। यह तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में मानवीय संवेदना के भाव पुष्ट हों।हम कह सकते है कि मानवीय संवेदना सीमित भाव का नाम नहीं, बल्कि यह तो व्यापक जीवन दृष्टि है, सार्थक जीवन मूल्य है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन तथा विकास तभी संभव है जब मनुष्य स्वयं के साथ-साथ दूसरों के हित का भी ध्यान रखे। यह कार्य संवेदनषील व्यक्ति अपनी उदारता, सहिष्णुता, प्रेम, करूणा के बल पर बड़ी सहजता से कर सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने हृदय में मानवीय संवेदना का विकास करना चाहिए, जिससे सभ्य, स्वस्थ, सुसंस्कृत समाज की स्थापना हो सके। मानवीय संवेदना के संदर्भ में उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो गई कि इसके बिना एक ओर जीवन अधूरा है, तो दूसरी ओर साहित्य भी अधूरा है।

मानवीय संवेदना की दृष्टि से ऋता शुक्ल की लगभग सभी रचनाएँ अद्वितीय है। अपने विभिन्न उपन्यासों - कितने जनम वैदेही, अरूंधती, कब आओगे महामना, कनिष्ठा ऊँगली का पाप, लोपा अगस्त्य में अपनी संवेदना के विविध रूप को पाठक वर्ग तक पहुँचाती हैं। इन सभी उपन्यासों में विभिन्न पात्रों की मानवीय संवेदना इतनी सजीव हैं कि वे सहृदय पाठकों को सीधे प्रभावित करती है।

ऋता शुक्ल ने अपने उपन्यास 'कितने जनम वैदेही' में वैदेही की अति पुरातन किंतु चिर नवीन कथा के साथ उनके जनपद तिवारीपुर की पुरखिनें जिसमें उनकी पितामही जागेष्वरी देई भी शामिल हैं - उनके संघर्ष, तप, वेदना की सहज अभिव्यक्ति दी है। वही जागेष्वरी देई जो अपने पति के हर अन्याय, अत्याचार का सदैव मौन प्रतिकार करती है। उनके जीवन की पीड़ा, वेदना हर संवेदनषील व्यक्ति को व्यथित करता है।लेखिका के विभिन्न रचनाओं के पात्र अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए शांत भाव से आगे बढ़ते जाते हैं। जागेष्वरी देई भी ऐसी ही पात्र हैं उनके हृदय का ममत्व पाठकों को भी प्रभावित करता है। जागेष्वरी आजी का यह कथन पाठकों को स्नेह से परिपूर्ण करता है -"पूत हो या धिया, संतान ही माता की असली धरोहर होती है। कनिया, इसका पालन-पोषण करना, इसकी नींद सोना-जागना, इसे हीरे -मानिक से कम नहीं समझना य बस, आज से यही तुम्हारी जिंदगी हुई समझो। "[1]

मातृहीना जागेष्वरी देई जैसे पात्र के चरित्र में करूणा, संवेदनषीलता और धैर्य का संतुलन दिखाई पड़ता है। वे अपने जीवन की पीड़ा को अपना नियती मानती है। हर अन्याय और अत्याचार को अपने मौन प्रतिकार से परास्त करती है। उनके चरित्र की इस विषेषता को लेखिका ने उनकी कमजोरी के रूप में नहीं बल्कि सक्रिय सहनषीलता के रूप में चित्रित किया है। ऐसी सहनषीलता जिसके बल पर वे अंतर-बाह्य दोनों तरह से मजबूत होती हैं।स्पष्ट है कि ऋता शुक्ल ने अपने इस उपन्यास में वैदेही तथा जागेष्वरी देई जैसी स्त्री पात्र के आजीवन 'संघर्ष', त्याग और सहनषीलता को अपनी मानवीय संवेदना के बल पर अत्यधिक गहराई से अभिव्यक्ति दी है। ऋता शुक्ल का एक अन्य उपन्यास 'कब आओगे महामना' मानवीय संवेदना का अत्यंत सषक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में महामना मदन मोहन मालवीय के जीवन, उनके उच्चादर्ष और संघर्षों के माध्यम से मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की गई है। उपन्यास में महामना का व्यक्तित्व करूणा,

दया, परहित जैसे गुणों से ओत-प्रोत है। महामना के हृदय में षिक्षा के माध्यम से श्रेष्ठ मानव निर्माण की भावना है।

उनके शैक्षिक चिंतन में मानवीय संवेदना का विषेष स्थान है। उनके द्वारा काषी हिंदू विष्वविद्यालय की स्थापना समाज में नैतिक तथा मानवीय मूल्यों से युक्त आदर्ष नागरिक तैयार करने की संवेदनषील सोच का सार्थक परिणाम है। काषी हिंदू विष्वविद्यालय की स्थापना के बाद उनका मुख्य उद्देष्य था देष के विद्यार्थियों को इस रूप में षिक्षित करना कि वो भविष्य में देष के विकास में अपना योगदान सुनिष्चित कर सकें। उनका मुख्य विचार था कि षिक्षा के माध्यम से ही समाज में आवष्यक परिवर्तन किया जा सकता है। यह षिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा नैतिकता से परिपूर्ण हो तभी उद्देष्य की पूर्ति संभव है। ऐसी उदार विचारों के स्वामी महामना के संदर्भ में ऋता शुक्ल का कथन अक्षरषः सत्य प्रतीत होता है -

"हिंदुत्व का विराट स्वर उनकी आत्मा की पोर-पोर में निनादित था। वह हिंदुत्व, जो केवल नीति नहीं, जीवन-सत्य है। वह हिंदुत्व जो आवरण मात्र नीति नहीं, विषुद्ध अध्यात्म है, सचेतन आत्म दर्षन है। " [2]

इस उपन्यास में राष्ट्रप्रेम को संकीर्ण भाव नहीं बल्कि व्यापक मानवीय चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने सदैव सत्य, अहिंसा, मानव मर्यादा, परोपकार, अपनी संस्कृति की रक्षा आदि भावों को अपने कर्मों से सिद्ध किया है। समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों जैसे - जातिगत भेदभाव, अषिक्षा, सामाजिक असमानता आदि के प्रति महामना की संवेदनषील दृष्टि को ऋता शुक्ल ने गहराई से उकेरा है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि समाज का कल्याण, राष्ट्र का कल्याण तब तक संभव नहीं है जब तक देष की युवा पीढ़ी त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, सदाचार को अपने जीवन का आधार नहीं बना लेती है।

कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में मानवीय संवेदना के विभिन्न रूप उपन्यास की केंद्रीय आत्मा है। लेखिका ने महामना के व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से समाज को संदेष दिया है कि राष्ट्र के विकास और कल्याण के लिए सभी को मानवीय मूल्यों प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, सदाचरण से युक्त होकर कार्य करना होगा। लेखिका का यह संदेष पाठक वर्ग को मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है।

इसी क्रम में ऋता शुक्ल का प्रसिद्ध उपन्यास 'अरूंधती' की चर्चा भी आवष्यक है। यह उपन्यास मानवीय संवेदना की सूक्ष्म, गहन और सार्थक अभिव्यक्ति का सषक्त उदाहरण है। यह उपन्यास विभिन्न भावों को केंद्र में रखकर रचा गया है जिसमें स्त्री जीवन की पीड़ा, उसका आत्मसंघर्ष, सामाजिक यथार्थ, मानवीय मूल्यों आदि प्रमुख है। इस उपन्यास में पात्रों की संवेदना को मात्र भावुकता नहीं कहा जा सकता है, बल्कि यह संवेदना सामाजिक चेतना और नैतिकता से परिपूर्ण है।

उपन्यास की केंद्रीय पात्र 'अरूंधती' स्त्री मन की संवेदनषीलता, सहनषीलता और आत्मसंघर्ष की प्रतिनिधि है। उपन्यास की भूमिका में लेखिका ने लिखा है -

"संसार के कर्मों से मुक्त हो जाने की लालसा उसकी नहीं, वह अपने भीतर छिपी बीजरूपा शक्ति का आवाहन करना जानती है। जाति धर्म और सामाजिक रूढ़ियों का परिहार करती हुई वह एक नए 'षांति-तीर्थ' की परिकल्पना करती है, जहाँ माता-पिता के प्रेम से वंचित एक अभिनव-षिषु संसार उसके अकृत ममत्व की प्रतीक्षा में है। " 3'अरूंधती' का जीवन इसलिए आदर्ष नहीं कि वह सदा दुख झेलती है बल्कि वह इसलिए अनुकरणीय है कि वह अपने दुख से ऊपर उठकर दूसरों के कष्ट को भी समझने की क्षमता रखती है। वह षिंजनी, मयंक, सुरम्या, स्वराज जैसे बालक-बालिकाओं की गुरूमाता बनकर सबके दुख-सुख में सहभागी बनती है। यह सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि उपन्यास को मानवीय संवेदना से भर देती है और पाठक को भावनात्मक रूप से जोड़ती है। उपन्यास में लेखिका ने एक ओर पारिवारिक दबाव तथा नैतिक पाखंड को तो दूसरी ओर सामाजिक रूढ़ियों और स्त्री उत्पीड़न को मानवीय पीड़ा के माध्यम से उद्घाटित करती हैं, जिससे पाठक वर्ग भी करूणा तथा आत्मचिंतन के भाव से भर जाते हैं। अरूंधती के जीवन का संघर्ष मानवीय गरिमा विषेषकर स्त्री गरिमा की रक्षा का संघर्ष बन जाता है। वह कठिन परिस्थितियों से हार न मानकर अपने अस्तित्व को पहचानने का प्रयास करती है।स्पष्ट है कि इस उपन्यास में मानवीय संवेदना, स्त्री जीवन के संघर्ष, पीड़ा, वेदना से युक्त अनुभव, सामाजिक यथार्थ और नैतिक मूल्यों के माध्यम से सजीव रूप में अभिव्यक्त हुई है। इस उपन्यास को केवल स्त्री कथा के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय करूणा, सहानुभूति, मानवीय संवेदना से युक्त साहित्य के रूप में पढ़ा जाता है।

ऋता शुक्ल द्वारा रचित लगभग सभी उपन्यासों में मानवीय संवेदना का स्वर काफी ऊँचा है। इस दृष्टि से इनके द्वारा रचित उपन्यास 'लोपा अगस्त्य' इनकी गहरी मानवीय संवेदना का सषक्त और गरिमामयी उदाहरण है। यह उपन्यास केवल पौराणिक-ऐतिहासिक चरित्रों की कथा मात्र नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और जीवन मूल्यों की संवेदनषील अभिव्यक्ति है। लेखिका ने लोपामुद्रा और अगस्त्य के जीवन प्रसंगों के माध्यम से मानवीय भावनाओं, त्याग, प्रेम का उदाहरण रूप आदि को अत्यंत सहजता से उकेरा है। उपन्यास में एक ओर केंद्रीय पात्र लोपा जो विदर्भ राज्य की राजकुमारी है, उसके मन की संवेदनषीलता, सहनषीलता, परोपकार की भावना आदि का चित्रण है, जो दूसरी ओर ऋषि अगस्त्य के चरित्र की कर्तव्यनिष्ठा और तपस्या का भी सुंदर चित्रण किया गया है। उपन्यास में लोपा अगस्त्य के प्रेम को आध्यात्मिक और मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया है। लोपा और अगस्त्य का संबंध केवल दांपत्य नहीं, बल्कि अटूट विष्वास, समर्पण, त्याग, सम्मान पर आधारित है। लेखिका ने अत्यंत संवेदनषीलता तथा भावनात्मक गहराई से इनके संबंधों को दिखाया है। राजप्रासाद की सुख-सुविधाओं में पली-बढ़ी, समस्त विद्याओं में पारंगत लोपामुद्रा जब वीतरोगी योगी यती ऋषि अगस्त्य को अपना जीवन साथी चुनती हैं तब अपने मुख से इस प्रकार के तर्क उपस्थित कर सभी को निष्चित कर देती हैं -"पिताश्री, तपोवन में रहनेवाले लोग गृही नहीं होते ..... ? जहाँ तप बल है, वहाँ जीवन कितना सरल हो जाता है। राजभवन की प्राचीरों में बंदिनी होकर रहना मुझे कभी भी स्वीकार्य नहीं।" [4] ऐश्वर्य से भरा जीवन त्याग कर वल्कलधारिणी बननेवाली लोपामुद्रा को उनके संकल्प से कोई भी डिगा नहीं पाया। स्पष्ट है कि लोपामुद्रा मात्र अपने सुख से सुखी नहीं हैं। उन्हें तो विदर्भ राज्य की समस्त प्रजा को सुखी देखना है। जब विदर्भ राज्य की संपूर्ण कृषि व्यवस्था जीर्ण-षीर्ष होने के कगार पर थी, जब प्रजा के पास कृषि योग्य भू-भाग का अभाव था तब सबसे अधिक चिंतनषील लोपामुद्रा थीं। उन्होंने समस्त असुविधाओं को दूर करने के लिए ऋषि अगस्त्य के पास अपनी प्रार्थना भेजी। उनका यह कृत्य लोगों के समक्ष यह भाव प्रस्तुत करती है कि लोककल्याण की भावना से ही व्यक्ति,समाज तथा राष्ट्र का कल्याण संभव है।

**निष्कर्ष** - निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ऋता शुक्ल के कथा-संसार की केंद्रीय चेतना मानवीय संवेदना है। अरूंधती, कब आओगे महामना, लोपा अगस्त्य जैसे विभिन्न उपन्यासों में लेखिका ने मानव-जीवन के विविध पक्षों को करूणा, सहानुभूति प्रेम, सदाचार, आत्मसम्मान आदि को बड़ी गहराई से अभिव्यक्त किया है। उनके संपूर्ण साहित्य में संवेदना कोरी भावुकता नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ और मानवीय मूल्यों से जुड़ी सजग दृष्टि के रूप में सामने आती है। सभी उपन्यासों में लेखिका की संवेदना व्यक्ति से आगे बढ़कर समाज और समाज से राष्ट्र तक विस्तृत होती दिखाई देती है। स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक विषमता और मानवीय गरिमा आदि सभी तत्व उनके उपन्यासों को अत्यधिक गहराई और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं। इनका साहित्य पाठक वर्ग को संवेदनषील, सहृदय और मानवीय बनने की प्रेरणा देते हैं।

**********

संदर्भ सूची:-

1.शुक्ल ऋता (2011), कितने जनम वैदेही, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 -31
2.शुक्ल ऋता (2013), कब आओगे महामना, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 -8
3.शुक्ल ऋता (2004), अरूंधती, सत्साहित्य प्रकाषन, दिल्ली, पृष्ठ सं0 -8
4.शुक्ल ऋता (2023), लोपा अगस्त्य, विद्या विकास एकेडमी, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 -23